तर्ज- तुमसे इजहारे हाल कर बैठे

आज फुरकत का ख्वाब टूट गया,
मिल गये तुम हिजाब टूट गया
दिल रूहों के सुभान आ बैठे,
अर्श खिलवत बयां कर बैठे

1--भूल बैठे थे हम जो खजाना
याद आया वो मूल ठिकाना
मेहर नूरजमाल कर बैठे

2--है हमेशा जो माशूक अर्श में
आज बन बैठे आशिक फर्श में
काम क्या बेमिसाल कर बैठे

3--है वो महबूब मेरे मेहरबां
कह दिया हमने राज दिल का
वाणी में हवाल दे बैठे

Nijanand App